BA Part II (Sub/GEN)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture I

भारत में निर्धनता के प्रमुख कारण : Main causes of poverty in India ⇒ भारत में निर्धनता के कारणों को ज्ञात करना सरल कार्य नहीं है; क्योंकि विभिन्न विद्वानों के अनुसार निर्धनता के कारण के अनेक दृष्टिकोण है। कहीं पर निर्धनता व्यक्तिगत हो सकती है और कहीं पर सामाजिक। B.N. Ganguli (The challenge of poverty) में निर्धनता को एक कारण का परिणाम नहीं मानकर अनेक कारणों का परिणाम माना है। इसमें वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, धार्मिक आदि कारणों को रखा जा सकता है। निर्धनता के प्रमुख कारण इस प्रकार है —

I) व्यक्तिगत कारण (Personal causes) ⇒ निर्धनता के प्रमुख कारणों में व्यक्तिगत कारण को प्रथम कारण माना जा सकता है। व्यक्तिगत कारणों में व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक अक्षमता आलस्य, अविवेकपूर्ण एवं अनियंत्रित व्यय, बुरी संगत, कुव्यसन एवं बुरी आदतें आदि अनेक बातें उसकी गरीबी के लिए उत्तरदायी होती है। प्रमुख रूप में व्यक्तिगत कारणों को निम्नांकित बिंदुओं में रखा जा सकता है —

a) शारीरिक अक्षमताएं ⇒ निर्धनता एवं शारीरिक अक्षमताएं भी सहसम्बद्ध है। शारीरिक अक्षम व्यक्ति का अधिक आय अपने बीमारियों को दूर करने में चला जाता है। वह न

तो संतुलित भोजन कर सकता है और न ही शुद्ध वातावरण में रह ही सकता है। फलस्वरूप वह निर्धनता की ओर अग्रसर हो जाता है।

(b) वंशानुगत अक्षमताएं - कुछ व्यक्ति जन्म से ही किसी वंशानुगत रोग से ग्रस्त होते हैं। कुछ जन्मजात अंधे, लंगड़े व कमजोर मंदबुद्धि वाले भी होते हैं। स्वाभाविक है कि सक्षम की तुलना में अधिक काम को वे वहन नहीं कर सकते हैं। अत: ऐसी असमर्थता उनको निर्धनता की ओर धकेलती चली जाती है।

(c) मानसिक अक्षमताएं ⇒ निर्धनता मानसिक अक्षमता का कारण एवं परिणाम दोनों ही मानी जा सकती है।

d) परिस्थितिजन्य अक्षमताएं ⇒ व्यक्ति के जीवन में कुछ परिस्थितियां व्यक्ति को निराश, हतोत्साहित एवं आलसी बना देती है। परिस्थितिजन्य अक्षमताएं भी निर्धनता को प्रोत्साहित करती है।

e) दुर्घटना ⇒ दुर्घटनाएं व्यक्ति को अपंग बना देती हैं, जिससे भविष्य के लिए उसके द्वारा बनाये गए सारे स्वप्न टूट जाते हैं एवं हीनता व निराशामय जीवन जीने को बाध्य हो जाता है।

f) अपव्यय ⇒ जिस प्रकार मितव्ययता या विवेकपूर्ण व्यय व्यक्ति की निर्धनता को दूर करता है अथवा उसकी आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाता है, ठीक उसके विपरीत अपव्यय, फिजूलखर्ची या विवेकहीन व्यय व्यक्ति को ऋणग्रस्त बने रहने को बाध्य कर देता है।